टमाटर की खेती

टमाटर की खेती एक व्वसाय के रूप में स्थान रखती है। इसका सब्जी उत्पादन में विशेष योगदान है। टमाटर में लाल रंग पाये जाने वाला तत्व लाइकोपिन औषधीय गुण लिए होता है। इसकी खेती पूरे भारत वर्ष में की जाती है इसमे विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है।

प्रमुख प्रजातियाँ

इसमे दो प्रकार की प्रजातियाँ पायी जाती है। एक सामान्य उन्नतशील प्रजातियाँइसमे की जैसे की हिसार अरुण, पंजाब छुहारा, अर्का विकास, अर्का सौरभ, काशी अमृत, पन्त टमाटर-3, कल्यानपुर टाइप-3, आजाद टी-5, आजाद टी-6, काशी, पूसा अर्ली, काशी अनुपम इत्यादि। दूसरी प्रकार की प्रजातियाँ है संकर प्रजातियाँ इसमे दो तरह की होती है, एक सीमित बढवार वाली, दूसरी असीमित बढवार वाली सबसे पहले हम सीमित बढवार वाली प्रजातियाँ बताना चाहेंगे रश्मी, रुपाली, अजन्ता पूसा हाइब्रिड 2, मंगला, वैशाली, मैत्री, अविनाश 22, स्वर्ण वैभव एव् ऋषि। दूसरे प्रकार की असीमित बढवार वाली प्रजातियाँ जैसे नवीन सोनाली, लैरिका, रत्ना, आदि। तीसरे प्रकार की रोग अवरोधी प्रजातियाँ होती है जैसे मोहनी, रत्ना, मिनाक्षी, मैत्री, मेनिका, ऋषि आदि है।

मृदा और जलवायु

टमाटर की खेती के लिए जीवांश युक्त बलुई दोमट एवं दोमट भूमि में सफलता पूर्वक की जा सकती है। भूमि में जल निकास होना अति आवश्यक है। टमाटर की खेती लगभग पूरे वर्ष की जा सकती है।

बीज की मात्रा

सामान्य एवं उन्नतशील प्रजातियों की बीज दर 500 से 600 ग्राम प्रति हैक्टर पड़ता है। और संकर प्रजातियों में 200 से 250 ग्राम प्रति हैक्टर आवश्यकता होती है।

पौध की रोपाई

टमाटर के रोपाई हेतु खेत की अच्छी तरह जुताई करके भुरभुरा बनाकर क्यारियां बना लेना चाहिए। अन्तिम जुताई में 200 से 250 कुंतल सड़ी गोबर की खाद अथवा अथवा कम्पोस्ट खाद को खेत में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। अच्छी पैदावार के लिए तत्व के रूप में 150 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस, एवं 80 किलो पोटाश की मात्रा देनी चाहिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा खेत तैयार करते समय अन्तिम जुताई में मिला देना चाहिए।

बीज उपचार

बीजो को बुवाई से पहले बीजो को 2 ग्राम एवं थीरम 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के मिश्रण से प्रति किलो ग्राम बीज को उपचारित करने के पश्चात बुवाई करनी चाहिए। जब पौधे एक सप्ताह के लगभग हो जाए तब डाइथेन एम् 45 या वैविसटीन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए।

खेत की तैयारी

स्वस्थ पौध तैयार करने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए भूमि तैयार होने पर 0.75 मीटर चौड़ी तथा आवश्यकता अनुसार 5 से 10 मीटर लम्बी और 15 से 20 सेंटी मीटर ऊँची क्यारियां बना लेना चाहिए। पौध डालने से पहले 5

किलो सड़ी गोबर की खाद प्रति क्यारी, 40 ग्राम डी. ए. पी., 10 ग्राम म्यूरेट ऑफ़ पोटाश तथा 5 ग्राम यूरिया प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से डालना चाहिए। बीज को 3 ग्राम फूराडान 10 ग्राम थीमेट से प्रति लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 3 से 4 दिन पहले क्यारियों में छिडकाव करने से हानिकारक कीट नष्ट हो जाते है।

रोपाई

इसमे समय अनुसार रोपाई की जाती है। वर्षा ऋतू में जून जुलाई में पौध डालकर जुलाई अगस्त में रोपाई की जाती है। जाड़े की फसल में सितम्बर में पौध डालकर अक्टूबर में रोपाई की जाती है। जायद की फसल 15 जनवरी से 15 फरवरी तक पौध तैयार करके 15 फरवरी से 15 मार्च तक रोपाई की जाती है। रोपाई लाइन से लाइन तथा पौध से पौध की दूरी में करनी चाहिए सीमित बढवार वाली फसले 60 सेन्टी मीटर लाइन से लाइन 45 सेन्टी मीटर पौध से पौध की दूरी रखनी चाहिए। असीमित बढवार वाली फसलो में 75 सेन्टी मीटर लाइन से लाइन 50 सेन्टी मीटर पौध से पौध की दूरी रखनी चाहिए। पौध की रोपाई शाम 3 बजे के बाद करनी चाहिए जिससे की रात में पौध सेट हो जाए।

सिचाई

पौध रोपाई के बाद तुरन्त ही हल्की सिचाई करनी चाहिए। बाद में आवश्यकता अनुसार सिचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार का नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण के लिए समय-समय पर निराई-गुड़ाई करके खेत को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। प्रत्येक निराई-गुड़ाई करते समय पौध पर मिट्टी चढ़ा देना चाहिए।

टमाटर की फसल में रोग

टमाटर की फसल में बहुत से रोग और कीट लगते है जैसे की अर्धगलन डंपिंग आफ यह पौधे की गलने की बीमारी है। यह फफूंद के कारण होती है। इसके नियंत्रण के लिए कई उपाय है। बीज बोने से पहले कैप्टन या थीरम से उपचारित कर लेना चाहिए। नर्सरी में कैप्टन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए। दूसरा आता है पगेती झुलसा इससे पुरानी पत्तियां पीली पड़कर सुखकर गिर जाती है। इसके नियंत्रण के लिए बुवाई से पहले बीज को उपचारित कर लेना चाहिए दूसरा इंडोफिल एम्-45 की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए। तीसरा कापर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम की मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए। तीसरा रोग है विषाणु रोग जिसे मोजेक कहते है। इसमे पत्तियाँ सिकुड़ जाती है पौधे की वृद्धि रुक जाती है। नियंत्रण हेतु सिकुड़ी पत्तियों को उखाड़ के जला देना चाहिए। फसल पर 2 ग्राम मोनोक्रोटोफास पानी में घोल बनाकर छिडकाव करते रहना चाहिए जिससे की हमें पैदावार अच्छी मिल सके।

टमाटर में कीट और उसका नियंत्रण

टमाटर की फसल में पत्ती, तना एव् फल वेधक कीट लगते है। इससे पौधों की पत्तियां ग्रसित होकर गिर जाती है तथा पौधे ऊपर से मुड़ जाते है। और फलो में छेद करके अन्दर से गुणवता ख़राब कर देते है। इसकी रोकथाम के लिए मैलाथियान 50 ई सी की 1 से 1.25 लीटर दवा 600 से 800 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिडकाव करना चाहिए। कार्बोसल्फान 35 ई. सी. उपरोक्त मात्रा का छिडकाव करना चाहिए।

फल का तुडाई

सामान्य किस्मो की तुडाई बुवाई से 90 से 100 दिन में शुरू की जाती है। संकर प्रजातियों की तुडाई 70 से 80 दिन से शुरू की जाती है। समय पर तुडाई करके पैक कर बाजार में भेजना चाहिए। जिससे अधिक तुडाई मिल सके और पैदावार अधिक प्राप्त हो सके।

उपज

सामान्य प्रजातियों की पैदावार 300 से 350 कुन्तल प्रति हैक्टर संकर प्रजातियों की पैदावार 550 से 600 कुन्तल पैदावार प्रति हैक्टर होती है।